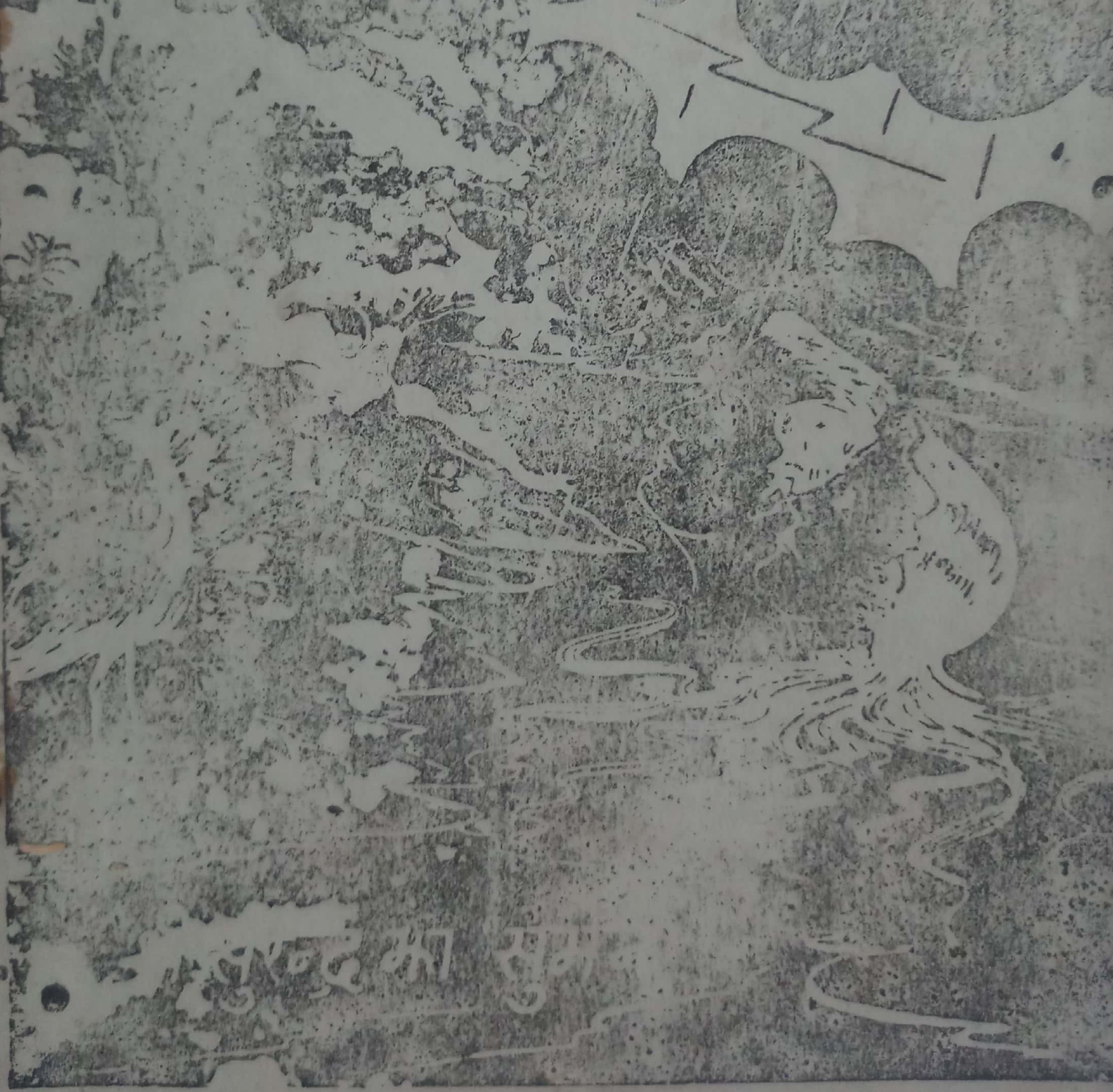


Dr. Ramdeo Jha

साओन-भादव

(रसात्मक ऋतु-गीत)



रचयिता

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'



मैथिली-मन्दिर

दरभंगा

प्रकाशक—

मैथिली-मन्दिर

राजकुमारगंज, दरभंगा ।

पञ्चम संस्करण

विक्रम-संवत्—२०४४

मूल्य— ३.५० (तीन रुपैया पचास पाइ) मात्र ।

मुद्रक—

श्री भूपेन्द्र झा

मिथिला प्रेस, दरभंगा ।

आमुख

कल्पनाक अद्‌भुत शक्ति यदि देखवाक हो तँ एहि पुस्तिकाक पढ़कें पढ़ू ।

'साओन-भादव' प्रतिवर्ष अवैत अछि, चल जाइत अछि । वर्षा हैब, एहि दूनू मासक साधारण घटना थीक । परन्तु वर्षामे भिन्न-भिन्न रसक कल्पना करब, प्रकृतिकें सांसारिक जीव बनाय भिन्न-भिन्न रूपमे ओकरा निरूपित करब, और ओहि निरूपणकें मर्मस्पर्शी बनैब साधारण बिषय नहि । उच्च कोटि क कलाकारेक द्वारा ई सम्भव भय सकैत अछि ।

मैथिली अनन्य उपासक पण्डित श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' एही श्रेणीक कलाकार छथि—तकर प्रमाण हुनक ई रचना छैन्ह । मणि जकाँ हुनक प्रतिभा प्रस्तुत पुस्तिकामे प्रतिभासित अछि ।

कुमार श्री गङ्गानन्द सिंह

सचिव सदन, दरभंगा

श्रावणी, १३५६ साल

(प्रथम संस्करण सँ उधृत)

अप्रतिम-प्रतिभा-किरण-मण्डित पण्डित-मार्तण्ड

पूज्य पितृव्य

दिवंगत

पं० तेजनारायण झा जी

क

पुण्य स्मरण मे

श्रद्धा-बिन्दु-स्वरूप

रस-निर्देश

१. संयोग शृङ्गार
२. विप्रलम्भ शृङ्गार
३. वीर
४. करुण
५. हास्य
६. अद्भुत
७. भयानक
८. रौद्र
९. बीभत्स
१०. शान्त
११. वात्सल्य
१२. (प्रेमा) भक्ति



साओन-भादव

संयोग श्रृंगार—

'साओन-भादव' क भरल मेघ के देखि सहसा प्रकृति-युवती क ओ वयस हृदय मे बसि जाइछ, जाहि सँ विवश भए नव-आशा-जिज्ञासा मन कें आन्दोलित करय लगैछ। तडित क कटाक्ष मे, कदम्ब क पुलक मे, जलदावली क आकुल अलक मे प्रेम वासना सँ वासित प्रेयसी क रूप-जीवन सहजहिँ आकर्षण क केन्द्र बनि जाइछ।

केवल शोभे वा हावभाव नहि, प्रकृति-प्रिया आकाश-पत्र मे बक-पाँती क रूप मे मोती सन अक्षर मे प्रेम-पत्र लिखबो आरंभ करैत छथि, जकर आखर नित्य-नवीन प्रेमी क आँखिएँ पढ़बा क योग्य बारम्बार दोहरयबा क योग्य।

आँखि जहाँ धरि पाँखि पसारि उड़ैत अछि, एके रस, एके दृश्य ओकरा लुब्ध-विमुग्ध करैछ। चञ्चल स्रोतस्विनी सिन्धु क सङ्गम क उल्लास मे तरङ्गित होइत छथि, वन-वल्लरी समीपवर्ती तरु क बाहु-शाखा मे लतरैत-चतरैत अछि, ओ स्वयं चिरसुन्दरी वसुन्धरा वासकसज्जा नायिका जकाँ ऋतु क अनुकूल सुगापंखी साड़ी पहिरि, दूभि क मखमली सेज सजाय, प्रियतम क परीक्षा मे उत्कण्ठित बसित भए उठैत छथि!

ओम्हर दिन-नायक—रजनी नायिका क संग मेघ क रेशमी चादरि घटाटोप कऽ तानि एकाकार भए अद्वैत रसानन्द क अनुभव कय रहल छथि। मेघक घनान्धकार मे दिन ओ राति मे कोनो भेद नहि रहय ई पावस क सहज चमत्कार थिक।

एहन रस भरल साओन-भादव कें प्रकृति-युवती क कोन वयस मानल जायत?

चिर-सोहागिनी

साओन-भादव

चिर सोहागित प्रकृति प्रिया केर
भरल वयस ई साओन-भादव !

ककर कटाक्ष तड़ित चञ्चल अछि
ककर पुलक ई नव कदम्ब अछि
जलद-जाल बनि ककर अलक
आकुल ई पसरल दिग्-दिगन्त अछि ?

ककर बलाका ललित प्रेम-लिपि
गगन-पत्र से अङ्कित नित नव ?
चिर सुहागिनी प्रकृति प्रिया केर
तरल वयस ई सावन-भादव ॥

× × ×

उगड़लि सरिता सिन्धु-संगमा
आलिंगित-तरु लता भंगिमा
दूभि-सेज सजि बासक सज्जा
वसुधा पहिरलि पट-हरीतिमा ॥

दिन रजनी घन-पट आवृत भए
एकाकार, न अछि विभेद लव
चिर विलासिनी प्रकृति प्रिया केर
सरस वयस ई साओन-भादव ॥

वीर—

'वीरभोग्या वसुन्धरा' तँ प्रसिद्ध : अपन जीवनहुक आभोग भोगि सकैछ तँ वीरे, इहो सिद्ध। पलायनवादी कायर कपूत, अथच आक्रामक क्रूर भूत-दूत दूहू धरती के' परती बना दैत यदिच उत्साह-धनी वीरक सर्वथा विरलता होइत! किन्तु वसुन्धरा बन्ध्या नहि! समय अपने क्षमा-माधुर्यहु कें तेज-ओज क आवश्यकता पड़िते छैक—भय-उत्पात, रौद्र-उत्पीड़न के' मेटयबा लेल उत्साही वीर उद्धारक क आह्वान युग-युग के' करहि पड़ैत छैक। एतय ऋतु-जगतहु मे पावसक गुरु-गम्भीर मेघध्वनि वीर रसनायक क आवाहन गर्जन रूप में सुनि पड़ैछ।

छनहि मे वातावरण बदलि गेल। अत्याचारक दारुण आतप प्रतीकारक वन निविड छाया मे नुकाय-बिलाय लागल! जतय किछु पूर्व लोकतापी ग्रीष्म क उद्दाम शासन मे जीव-जन्तु तरु-तृण जरि-मरि रहल छल, ततय लोकरोष क अन्तर्वाष्प घनीभूत क्षितिज सँ व्योम धरि उमड़ि आयल! सुरपुर क शांत पौरुष पिण्ड जेना पिघलि उठल हो! लगले मेघ क धनुष तनि गेल! बिन्दु-बिन्दु वाणक झरी लागि गेल। ग्रीष्मक सैनिक क रुण्ड-मुण्ड खसय लागल! नील घनघटा क ढ़ाल ओ बिजलीक तीख तरुआरि क धार रणरंग के' ओरो गाढ बना गेल।

हन्त! ग्रीष्मक हमलावर फौज सभ कटि-कुटि गेल। ओकर अजस्र रक्त-धार सँ, पावसक रण-सागरक हिल्लोल सँ, जेना विश्व दहा भसिया गेल हो!

साओन-भादव, जेना ओही तेज-ओज भरल, उत्साह-तरल रणगीतक मूर्त्ता बनि गेल हो!

समर-भूमि

साओन-भादव

नव उत्साह - सजल पावस केर
समर - भूमि ई साओन - भादव

देखि बिकट उत्ताप जगत भरि
बिकल लोक आतप मे जरि-जरि
प्रखर ग्रीष्म - शासन सँ आसन
डोलि उठल सुरपुर पुरुष क धरि !

तानि-मेघ - धनु बिन्दु-बाण लय
क्रुद्ध युद्ध मे जुटल पवन - जव ।
नव उत्साह सजल पावस केर
समर - भूमि ई साओन भादव ॥

× × ×

नील - नील घन - घटा जकर अछि
ढाल, खड्ग, विद्युत करगत अछि !
ग्रीष्म अरिदलक क छिन अंग सँ
रक्त - धार की बरसि रहल अछि ?

नभ सँ लए वसुधा धरि सगरो
रण सागर उमड़ल ई अभिनव ।
नव उत्साह - सजल पावस केर
समर भूमि ई साओन-भादव ॥

जीवन कें दिनमान मानी तँ रौद-छाया दुहूक दृश्य देखहि पड़त ! दिनकर क उज्जज्वल ज्योति-पिण्ड क निरीक्षक कें मिल धब्बा क अनुभव होइतहि छैक । जीवन क पूर्णिमापक्ष कें अमा-कक्षा क परिक्रमा करहि पड़ैछ । उल्लासक तुहिन-पिण्डकें शोक-विषादक तापमे गलहि पड़ैछ ।

वैज्ञानिक कहैछ जे जीवनक संचारे थिक ताप । ठंढायल तँ मृत्यु रेचना, गरमायल तँ जीवन चेतना । कवि-कलाकार सहजहिं मिलन-मेलना कें प्रणय क अन्त ओ चिरबिरह वेदना कें प्रेमक अमर प्रेरणा मानितहिं छथि । भक्त जन स्मृतिक हेतु दुःख शोक क आह्वान करताहे, विस्मृतिक लेल सुख कें दोषी कहताहे । काव्यक प्रेरणा स्रोत तँ वेदना क घाटिये सँ बहैत आयल अछि — 'शोकः श्लोकस्वमागतः' आदिम कवि-अनुभूति थिक ।

ऋतुअहु मे वर्षा तँ वेदना-द्रवित हृदय क प्रतीके मानल गेल अछि । नूतन पुरातन प्रत्येक युग क कवि पावस कें शोकविषाद सूत्र क टीका भाष्य क रूप मे निरूपिते करैत आयल छथि ।

उदाहरणार्थ—महाभारतक पृष्ठभूमिमे देखीतँ अश्रुमुखी दिवा-उत्तरा प्रियतमदिवाकरक दर्शनलेल विकल-विह्वल क्षितिजक अन्तःपुरमेकतहु मूर्छित पड़लि अछि ! मेघक चक्रव्यूह मे जकर प्राणाधिक झंझा-महारथी क बिन्दु शर वेधित अस्तोन्मुख निष्प्राण बनल अछि, तकर शोक-महासागर क माप की कोनो पद-तुक क इन्च सँ कयल जा सकैछ ? जाहि दुर्दिन-ग्रस्त आशा-दिशा मे भविष्य चन्द्रहु क दर्शन सम्भावना नहि, ओहेन चिरशोकवती विषादमयी तुलना निरन्तर-वर्षिणी वर्षाऋतु कदाच् किञ्चित् कय लिअय ।

आदि काव्यहुक फलक पर यदि दृष्टि दी त ओतहु तेहने करुणाधन दृश्य अङ्कित भेटतं । मेघ-व्याध बिन्दु-वाणक झरी लगा देलक, दिनपति क्रौञ्च क जीवन ज्योति मिझा-पझा देलक ! दिवारी सहचरी क करुण वेदना आदिकविक प्रथम शोक कें चरम कोटि पर पहुँचा देलक । अहह ! असह शोक तापक निविडतासँ मुनिक संयम कठोर हृदय शिलोच्चय सहसा जेना पिघलि चलल हो, से तेना जेना कगत कें करुणाक बन्या मे बहा-वहा देबाक होइक !

की ओहि वेदना-परम्पराक प्रवाह आइ धरि कवि-कविता क उर देश कें ठुबौने नहि अछि ? सावन-भादव क 'ई भर बादर माह' ऋतु की, सहृदय क हृदय कें आइधरि उवडुबौने नहि अछि ?

विषादमयी एहि चिरप्रश्न क प्रतीक बनि ठाढ़ि अछि ।

विषाद्मयी

साओन भादव

कोन विषादमयी क नयन जल—
द्रवित आइ धरि साओन-भादव !

मेघ - व्यूह कँ दुस दिस घेरल
प्रियतम जकर रिक्त कर मेघल !
दिवा उत्तरा अनुखन दर्शन-
उत्सुक अश्रुमुखी पथ हेरल ॥

आशा - दिशा ग्रस्त दुर्दिन सँ
चन्द्रमुखक दर्शनहु असम्भव ।
कोन विषादमयीक नयन - जल
गलित आइ धरि साओन भादव

× × ×

किंवा मेघ - व्याध सँ येधित
दिनपति क्रौञ्च ज्योति - निःशेषित
सहचरी क स्वर करुण चिरन्तन
विरह अनुभवेँ मुनि-मन क्लेषित

आदि कवि क उर छन्द उमड़ि जल
बिन्दु - बिन्दु करुणा रस उद्भव ।
कोन विषादमयीक नयन - जल —
रचित आइ धरि साओन-भादव ॥

हास्य--   ५

मनोविकारक एक अपूर्व प्रकार भेटत हासमे। कखनहु जखन ई अनुकूल स्थितिक रति-राग संग प्रयुक्त होयत तँ मूल रसकेँ प्रगाढ़ करत, उद्दीपना देत विशेष संचारशील बनाओत। यदिच पुनः प्रतिकूल स्थितिक रस-भाव आदियहुमे संयुक्त बनत तँ प्रतिभा-मौलिक आधारे सिद्ध होयत। शकुन्तलाक शृङ्गारकेँ प्रियंवदाक परिहास यदि मधुरतम बनवैछ तँ नारदक शृङ्गारिक मोहकेँ, अथवा च्यवनक रागात्मक मतिभ्रमकेँ खटमधुरक रोचकता एहि हास्यक सिड़कासँ भेटैछ। एहिना वात्सल्यक बालचापल्य दशरथक घर-आङनकेँ अशेष धवलित करैछ, कृष्णक शिशु-सुलभ चाञ्चल्य यशोदाक बन्धन-मोचन लीलाक विशेष उपकरण बनैछ। तहिना रौद्रमूर्ति परशुरामक क्रोधाग्निकेँ उद्दीपित करवामे लक्ष्मणक हास्य-व्यंग्य एवं दुर्योधनक ईर्ष्या ज्वाला केँ जगयवामे द्रौपदीक हासोक्ति 'शुष्केन्धनमिवनलः' केर कहवी चरितार्थ करैछ। कखनहु कापुरुषक भय केँ वीरक उपहास भोग्य वस्तुक प्रति घृणावैरूप्यसँ वैराग्यक योग जगयवामे हासक उपयोग होइछ। हास्यक एहि विविध विध योग-प्रयोग साहित्य-पथक प्रशस्त पाथेय मानल जाइछ—बीच-बीचक विश्राम-वृक्ष जानल जाइछ। करुण सन एकाध रस एकर परिधिसँ वहिर्भूत अछि अवश्य, गाम्भीर्य सँ ई कने फराक रहय चाहत, उदासीके स्पृश्य बुझैत रहय अवश्य, परञ्च मानव-प्रकृतिक ई तथ्य सर्वथा विलक्षणता रखैछ जे सृष्टिक प्राणी मात्रमे राग-विराग, संग्रह-त्याग, भय क्रोध आदि सभ भाव-विकार भेटत किन्तु हँसैछ हँसवैछ मानवेटा। तेँ ई मानय पड़त हास्य रस—जाहिमे स्मिती-हास-अतिहास-अट्टहासक सब प्रकार अछि—हास-परिहास, व्यंग्य-कटाक्ष, कूट-कपटोक्ति सभक उपचार अछि—मानव रुचिकसवसँ अधिक चटकारी अचारे थिकैक सर्वथा रोचक, उद्दीपक एवं अन्यान्यरस ग्रहणक प्रेरक।

ऋतुक रंगमंचहुकेर हास्य-नाटक अभिनय-पटुता देखवा योग्य। साओन-भादोक वर्षा-बाढिमे जेना हास्योक तटबन्ध टूटि छूटल हो! जेम्हर देखू, हँसी-हँसी! आकाश हँसि रहल अछि बगुला क धवल पाँतिमे। धरती क हँसी फुटैछ बयोलाक दन्तुरित विकासमे, चर-चाँचर कुमुद कुमुद-दन्तावली लय खिलखिला रहल अछि, नद-नदी कलकल ध्वनिसँ हँसैछ तँ द्रुमवन पल्लवी अधर-रेहसँ मुसकिया रहल अछि! जेना बिन्दु-बिन्दु सँ प्रकृतिक हास्य झहरि रहल हो।

कने दोग-दाग सँ प्रकृतिक ई हास्य खेला देखैत चलू।

हास्यमयी

साओन-भादव

हास्यमयी सहचरी प्रकृति केर
व्यङ्ग्य तरङ्गित साओन-भादव

स्मितमुख बक-पंक्तिएँ व्योम-तल
केतक व्याज हँसय थल खलखल
विकच कुमुद दन्तावलीक छल
हास्य-मुखर सर-सरिता कलकल ॥

द्रुम-दल पल्लव-पुलकित अनुखन
व्यंग्य-बिन्दु घन बरिसय अभिनव ।
हास्यमयी सहचरी प्रकृति केर
अङ्ग तरङ्गित साओन-भादव

× × ×

ओढ़ि मेघ-दल कारी कम्बल
झाँपि चन्द्रमुख अनचिन्हारि छल ।
घन-पट सँ रहि-रहि कनडेरिएँ
ताकि हँसए-हँसबए अति चञ्चल ॥

बिजुरि-घटा जनु हास-छटा
प्रियतमक संग परिहासक अनुभव
हास्यमयी सहचरी प्रकृति केर
अङ्गित इङ्गित साओन-भादव ॥

अद्भुत—

मनोरंजनक मूल मे निहित अछि कौतुक-कुतूहल। कुतूहलक आश्रय अछि चमत्कार। आ' चमत्कारे थिक रसक अन्यतम तत्त्व। 'रसे सारश्चमत्कारः'—आचार्य नारायण सन कृती आचार्यक उपलब्धि थिक। ओ स्पष्टतया रसमात्र मे चमत्कारक प्राणवत्ता सिद्ध करैत निर्णय दैत छथि—'सर्वत्राऽप्यद्भुतो रसः'

वस्तुतः जहिना रस चमत्कारक सहचर-परिचर तहिना अलङ्कारो ओकर चर-अनुचर। विच्छित्ति तँ चमत्कृतिक पर्याये थिक, उत्प्रेक्षा वा अतिशयोक्ति, विषम वा विरोध, विभावना वा विशेषोक्ति, तद्गुण वा अतद्गुण सबतरि विस्मयजनकते शोभाधायक। लीलापुरुषक समस्त सृष्टि-कला कौतुकावह! तहिना काव्यक कल्पना, संगीतक स्वरसंचार, वैज्ञानिकक उद्भावना, सिद्धक स्फुटता तँ चमत्कार प्रदर्शनहि सँ, चित्तविस्तार विस्मयक आकर्षणहि सँ। नवीनताक नामे थिक प्राक्तन प्रकृतिक परे चमत्कार प्रकार।

ऋतु-जगत मे वातावरणक परिवर्तनसँ नवीनताक चक्र घूर्णित तँ रहैछ, किन्तु ओकर गतिवेगक तीव्रता अबैछ अद्भुतक स्नेहाकर्षसँ। एतय साओन-भादवक परिष्कार चित्तविस्फार-जनक चमत्कार मे देखू! कुतु-किनी प्रकृति-इन्द्र-जालिनी क चमत्कार-कौतुक! झकझक दिनमे मेघक सघन श्यामता सँ जेना रातुक स्याही पोति देने हो! स्याह खटखट राति मे विद्युतक द्युति सँ जेना दिनक दृश्य देखा देने हो! वर्षामे वीरबहुटीक अङोरा जेना ढेर लागल हो! खन गर्मीस घमघमी, तखन झञ्झा प्रवातसँ थरथरी, ई सभ धूपछाही खेल देखि स्तिमित-विस्मित होएबाक प्रसङ्ग साओन भादवहिमे संगत।

इन्द्रजालिनी

साओन-भादव

इन्द्रजालिनी प्रकृति - नटी केर
चमत्कार ई साओन-भादव !

दिनमे रातुक दृश्य तमोमय
विद्युत् बल निशि दिवस ज्योतिमय
झाझ-झाझ मे साँझ क सुन्दर
दृश्य देखाय हृदय हुलसावथ

सूर्य चन्द्र-तारावली क कय लोप
लोक विस्मित करइत नव
इन्द्रजालिनी प्रकृति नटी केर
चमत्कार ई साओन - भादव

× × ×

वीरवधूटी लाल ढेर ई
जल सं आगि क वृष्टि भेल की ?
अगह छनहि अछि उपम उमस
झंझा क झोंक झट झमकि गेल की !

आतप-छाया नव-रंग माया
रचइत मोहए, विश्व चकित सब !
इन्द्रजालिनी प्रकृति नटी केर
चमत्कार ई साओन - भादव !

Scanned by CamScanner

भयानक—

प्राणीक जे सभ सहज मूलवृत्ति कहल जाइछ ताहिमे भय थिक अन्यतम। सूक्ष्मसँ सूक्ष्मतम एवं महत्‌सँ महत्तम जीवमे प्रधानतया आत्मरक्षाक प्रवृत्ति समानतया देखल जाइछ, जकर हेतु—वीज थिक भय-आतङ्क। अथच एकर भूमि अछि वस्तुतः प्रेम-ममते, तेँ कहलो अछि—'स्नेहः खलु पापशङ्की'। व्यङ्गोक्ति अछि—'भय विनु होय न प्रीति'। किन्तु भयक विडम्बना ई जे, एकर उद्‌गम होइछ प्रतीकारक असमर्थतामे। तेँ भयक भावमे अन्तर्भाव रहैछ अनुकूल वस्तुक प्रति आकर्षण एवं प्रतिकूलक प्रति आस्थाहीन विकर्षणक। एहि द्वन्द्वक बीच भयक रस-रीति साहित्यमे अङ्कित-चित्रित। रसभोजमे कटु-अम्ल जकाँ उद्वेजक रहितहुँ सहेज'क योग्य।

साओन-भादवक एक भयावह वातावरण! घन-घमण्ड गर्जन सँ कंपित लोक-जीवन कोना ने त्रस्त-व्यस्त होअओ? कारी-कारी वादर क्रूर पिशाची जकाँ निशाकाशकेँ घेर नेने अछि——सहसा बलाकाक विकट मुण्ड-माल गरामे लटकौने, अंधकारक केश-राशि छिरिऔने, झंझाक पंजा उठौने तड़ितक विकट दन्तावली कटकटवैत आगाँ आबि ठाढ़ि!

सब तरि भगदड़ि मचल अछि! सुरुज डरेँ छपित भेल, चान चौंकि चुप्पहि नुकयला, तारक-दल दूर-दूर दौड़ि पड़ायल। गाछ-पात थरथराइत, नदी नालाक दम फुलैत, धरातल डरेँ पानि-पानि!

भयानकक रस-विभीषिकाक एक बिम्ब मात्र गीतक अन्तरामे।

भैरवि भयाओनि

साओन - भादव

घन घमंड गर्जन सँ दिस दिस
चलल कँपावय साओन - भादव

विकट दन्त तडित क कटकटवय
मेघ पिशाची नभ - तट घेरय
एक पाँति क लटकाय मुण्ड माला
झंझा - पंजे झिकझोरय

अन्धकार मे पटकि विश्व कें
झटकि प्रलय-समयक कय परिभव
घन घमण्ड गर्जन सँ दिस - दिस
चलल कँपावय साओन - भादव !

वृष्टि - मुष्टिएँ सृष्टि कानि की
भयें मेल अछि पानि - पानि की !
दूरहु रहितहुँ, ज्योति अछेतहुँ
रवि-शशि-नखत नुकैल जानि की ?

जीव-जन्तु-तृण-तन्तु क गति की ?
स्वयं प्रकृत कम्पित झंझा-रव
घन घमण्ड गर्जन सँ दिस - दिस
चलल कँपावय साओन - भादव

(८)

रौद्र—

प्रलयङ्कर रुद्र यदि शुभंकर शिव रूपें पूजित होथि, आद्या करालिका कालिका यदि पुनि त्रिपुरसुन्दरीं षोडशीक रुचि-रोचित होथि तँ क्रूर क्रोधी रौद्रो यदि रस-माधुर्य मे योजित हो तँ असङ्गति कतय ?

मानव-मनक विकारमे क्रोधो अनिवार्ये। से नहि हो तँ कामक उपलब्धिक निर्वीयता कोना ? क्रुद्ध नहि तँ युद्धावेशक प्रसंगे की ? 'अवन्ध्यकोपस्य निहन्तुरापदाम्–' प्रशस्तिक स्वस्ति कोना ?

'कामात् क्रोधः' रहओ, किन्तु वास्तविक हेतु तँ 'अन्यायात्' सैह चरितार्थ रहैछ। सेतुबंधी रामक रोष, दुःशासनध्वंसी भीमक क्रोध, अफजल-मर्दी शिवाजीक कोप अथवा देशद्रोही क प्रति देशभक्तक विक्षोभ जें काव्यकें ओजस्वी तरस्वी बनबैछ तें क्रोधमूलक रौद्रक मूल्यांकन कवि-भावुक दृष्टि मे ककरहुसँ कनिष्ठहु कम नहि।

एतय किछु प्रश्न-जिज्ञासा:–

साओन-भादव की कोनहु विसङ्गतिसँ कुपित काल-पुरुषक तनल कुटिल भृकुटि त ने थिक ? बिजली ककरहु पर तमतमा कय उठौल करेन्ट-दण्ड तँ ने थिक ? मेघक ई गर्जन-तर्जन ककरा पर ? झंझा-निलक डाँट डपट, कि एहन दुरन्त रोषी, ककरा पर ?

काल पुरुष

साओन - भादव

कुपित काल - पुरुष क कठोर मुख
भृकुटि कुटिल ई साओन-भादव !

के दुरन्त दोषी जकरा पर
तडित दण्ड छोड़थि जकरा पर
मेघ गर्जने तमकि - तमकि पुनि
उमड़ि ऐल अछि क्षुब्ध क्रुद्धतर

आइ बरसि पड़ता ने जानि
ककरा पर, कखन ? सशंक भेल सब
कुपित काल पुरुषक कठोर मुख
भृकुटि - कुटिल ई साओन-भादव

× × ×

झंझानिल छल कोपें कम्पित
वलित शरीर तडित ज्वालावृत
वज्र खसाबथि तनिका पर जे
मानिनी क नहि चरण - प्रान्त नत

बरजि रहल छथि गरजि - गरजि कय
अशरण पथिक क हन्त पराभव
कुपित काल - पुरुषक कठोर मुख
भृकुटि - कुटिल ई साओन-भादव ?

बीभत्स—

घृणा जकर स्थायी भाव थिकैक जकरा देखि-सुनि लोक आँखि-नाक मुनवाक चेष्टा कय उठैछ, ओहने ओहन जुगुप्सित वस्तु जकर आलम्बन-उद्दीपन थिकैक, तादि बिभत्स कें आलङ्कारिक लोकनि कोना रस मानलन्हि ? ओ रस, जकरा आनन्दक प्रतीक मानल गेल अछि—ब्रह्मानन्दक सहोदर कहल गेल अछि !

प्रश्न अछि स्वाभाविक, किन्तु उत्तरक हेतु तर्क-बहस जरूरी नहि। उदाहरण वा नजीर देखयवे पर्याप्त। यदि सत्ये बीभत्स सँ रस-कोविद घृणे करैत रहितथि तँ महाभारतक युद्धपर्बक कतोक पृष्ठ कें नोचय फाड़य पड़ितन्हि वा रामायणक लङ्कादर्शनमे हनुमानकें जाहि आसुरी मम्यता (!) क दर्शन भेलन्हि ओहि स्थल कें बाल्मीकि, तुलसी, चन्दाझा धरिकें 'अदर्शनं लोपः' सूत्रक उदाहरण बनबय पड़ितन्हि।

'साओन-भादव' क रूप मे एहिठाम पापक परिपाक स्वरूप प्रकृतिक गलित-पचित रूपक परिकल्पना कयल गेल अछि। दृश्य विचित्र अछि—प्रकृतिक सम्पूर्ण आकृति कुष्ठीक रूप मे देखल जाइछ। मेघक घाओ सँ पूति यत्र-तत्र धारा- प्रवाह बहि रहल अछि। कतहु बिजुरीक रूपमे चरक फूटल अछि। इहो स्पष्ट अछि जे कादव जकरा बूझि रहल छी से प्रकृतिक गलित गात्र सँ बहि-बहि भूमि पर जमल पीजुए थीक !

शिव शिव ! एहेन दशाकें देखबाक साहसो नहि। हंस बेचारे उड़ि पड़ालाह (वर्षा ऋतुमे हंसक मानस सरोवर यात्रा प्रसिद्धे) ! नदीक हृदय घृणासँ कलुषित भए गेल—कदुआ गेल ! आकाश जलक छलसँ थूक फेकैत अछि, जाहिसँ सम्पूर्ण स्थल पिच-पिच भय गेल।

रोग बुझि पड़ैछ असाध्ये भए गेल। हँ, शरद चिकित्सकटा एहन छथि जनिका पैर पड़ैथि तँ प्रकृतिक शरीर पुनि निर्मल-नीरोग बनि सकतन्हि। अथवा रोगी साओन-भादवक लेल—'औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणः स्वयम्।'

Scanned by CamScanner

घृणामयी

साओन-भादव

चिर अभिशापित घृणा-मूर्ति
परिपाक पाप केर साओन-भादव

घन-व्रण भरल शरीर मलिन अछि
बिजुरी नहि, ई चरक-चिह्न अछि
सलिल-धार नहि, गलित गात्र केर
पूति-प्रवाह चलल अविरल अछि

बहि-बहि जमल पीज अछि सगरो
नहि बुझबे जे ई थिक कादव
चिर अभिशापित घृणा-मूर्ति
परिपाक पाप केर साओन-भादव

× × ×

हंस घृणा सँ दूर पड़ैले
नदी-हृदय कलुषित भरि ऐले
वर्षा-व्याजें फेकि थूक नभ
घृणा करए, पिच-पिच थल भेले

शरद-वैद्य केर चरण घरथु वरु
मरण शरण अछि एके लाघव
चिर अभिशापित घृणा-मूर्ति
परिपाक पाप केर सावन-भादव

शान्त

रसवादक प्रवर्तक नाट्यशास्त्री भरत रागात्मिका वृत्तिक अनुरञ्जनहि सँ रस-व्यञ्जना जनबैत, 'शान्त' केँ अभिनय सँ एकात कय देल। परञ्च गति विरागात्मक निवृत्तिमार्गहुमे गम्यता छैक—एकर पुष्टि लक्षण क्षेत्रमे मम्मट विश्वनाथ सँ जगन्नाथ धरि, एवं लक्ष्य क्षेत्रमे व्यास-कालिदास सँ गोकुलनाथ धरि, सब तरि श्रव्य होइत आयल। शम-निवृत्ति पुनि प्रसाद-वृत्तिक निमित्त रहल, ओ सहचारी निर्वेद स्थायी भावक अधिकारी बनल। सुतरां बौद्ध-जैन एवं सिद्ध-साधक लोकनिक काव्य-नाट्य-गीति रीति सर्वत्र शान्तिक रस-स्निग्ध वितान तनि गेल ओ राशि-राशि भक्त-भावुक विश्रान्तिक सहज अनुभूति उपलब्ध कयल।

प्रकृत ऋतुगीतमे साओन-भादबक साधनाक एक झाँकी :—

घनघटा जनिक जटा, विद्युत जनिक धौत वल्कल, नभ-गंगा-जल भरल नदी जनिक कमण्डलु—ओहि त्रिकाल-स्थायी, बलाका-माला पर घन-ध्वनिक मन्त्र जपनिहार, गगन-गुफाक जटिल यती क दर्शन कय अपना केँ पवित्र करू।

एही सभ साधनाक ई परिणाम थिक जे भाब ई ऋतु-योगी 'स्थित-प्रज्ञ' क स्थितिमे आबि गेलाह। ते तँ दिन-रजनीकेँ एकाकार करैत, घनश्यामक अनवरत ध्यान धरैत, सञ्चित रसक त्यागसुखक ई निदर्शन बनि गेल छथि।

'सा मा शान्तरेधि .

शान्त तपस्वी

साओन - भादव

गगन-गुफा बसि जटिल यती के
समाधिस्थ ई साओन-भादव

मेघ क जटा, विद्युत क बल्कल
नदी कमण्डलु, नभ गङ्गा-जल
स्नान त्रिकाल, ठाँओ कय आसन
तृण विस्तृत, घन-ध्वनिक मन्त्रबल

वितत बलाका माला जपइत
ध्यान निमीलित रवि-शशि दृग-युग
गगन गुफा बसि जटिल यती के
साधनस्थ ई साओन-भादव ?

× × ×

सुख-दुख दिन-रजनी समान अछि
घनश्याम क एकान्त ध्यान अछि
घन-छाया काया, चपला श्री
यौवन जल बुद्बुद प्रमाण अछि

सञ्चित रस क त्याग-सुख दुर्लभ
शान्ति-मार्गहि क कहइत अनुभव
गगन-गुफा बसि जटिल यती के
स्थितप्रज्ञ ई साओन-भादव

वात्सल्य—

प्रेम थिक परात्पर परमेश्वरक भावात्मक रूप। तेँ तँ 'खं ब्रह्म'क घोषणा कयनिहार, निर्भीव आत्मस्थितिमे अवस्थित योगिओलोकनि प्रेमक योगक्षेमकेँ अस्वीकार नहि कय सकलाह।

ई प्रेम भिन्न-भिन्न आलम्बनक आलम्बनेँ नाना आकार-प्रकारमे प्रकट होइछ। रति-अनुराग, स्नेह-वात्सल्य, श्रद्धा-भक्ति सब प्रेमक छवि-छाया थिक। ओहिमे जे सीमित व्याप्य, वर्ग विशेषे धरि ग्राह्य; तेँ ओ भाव रूपमे परिगणित। जे असीम व्यापक, सर्वसाधारण-संवेद्य से रसरूपमे गृहीत। सतीक पतिभक्ति श्रद्धामूलक भेने भावगे ओ प्रणयिनीक अनुरक्ति शृङ्गारमे परिणत होइछ। कहिओ श्रद्धा-भक्ति जकाँ वात्सल्यो 'भाव'क सीमा मे पड़ैत छल। आगाँ चलि कय एकर लक्ष्य-क्षेत्रक व्यापकता एवं सामग्री समग्रता देखि आचार्य मुनीन्द्र एकरा रस रूपमे प्रतिष्ठित कयलन्हि।

× × ×

प्रकृतिमे प्रियाक मधुरिमा तँ देखल गेल छल, एतय ओकर वात्सल्यक महिमा दिस दृक्पात करु।

साओन-भादवक स्नेहाञ्चल मे ममताक कते तानी-भरनी ! ई ऋतुए थिक स्नेहमयी प्रकृति-जननीक प्रेमद्रवित पयः-स्निग्ध आँचर, जतय ग्रीष्मक पाँतर मे पड़ल विश्वक-शिशु केँ विश्राम भेटैछ, रौद्र-शीतमे टाँट-ओँट जगत जीव केँ सरस छाया भेटैछ। भूखल - प्यासल संतति केँ खैबा-पीवाक ओरिआओन ममतामयी प्रकृतिक हाथेँ कते जतन सँ कयल जाइछ !

बिन्दु-बिन्दु हृदयक रस दूध पिऔनिहार, मेघक अञ्चल छाया मे अकाल-विकाल सँ बचौनिहार, चिरवत्सला प्रकृति जननीक एहि वर्षाहु ऋतुवयसक प्रति श्रद्धापूर्ण नति-प्रणति !

वात्सल्यमयी

साओन-भादव

चिर-वत्सला प्रकृति जननी केर
स्नेहाञ्चल ई साओन-भादव

देखि विश्व-शिशु ग्रीष्म क पाँतर
पड़ल, क्षुधा-ज्वाला सँ आतुर
झटकि उठाए कोर भरि बादर
स्नेहमयी क द्रवित उर-आँचर

बिन्दु-बिन्दु हृदय क रस पय द्रय
करइत सन्तान क जीवन नव
चिर वत्सला प्रकृति जननी केर
स्नेहाञ्चल ई साओन-भादव

× × ×

शीत-रौद्र सँ रक्षा पावओ
ने अभाव जल-अन्न क दाबओ
खेलओ नित कन्दुक कदम्ब सँ
मुदित मयूर संग भए नाचओ

मेघ क अञ्चल छाया मे हो
पोषित वत्स, ममत्व नित्य नव
चिर-वत्सला प्रकृति जननी केर
स्नेहाञ्चल ई साओन-भादव

(प्रेमा) भक्ति—

व्यासदेवक समाधिभाषा भागवतमे उद्भासित, जयदेवक गीत-बांसुरीमे वादित एवं अभिनव जयदेवक कोकिल-काकली मे अनुनादित राधा-माधवक ई अद्वैतामृतवर्षिणी केलिकला भक्त-भावकक निभृत हृदय-निकुञ्जमे निरन्तर ध्वनितं रणित होइत आयल, ओकर पन्द्रहम शताब्दी धरिक लक्षणाचार्य लोकनि 'देवादिविषया रतिः' कहि भावभूमिकेमे अन्त-र्भावित करैत रहलाह। किन्तु गौराङ्ग महाप्रभु कृष्ण चैतन्यक अवतार होइतहिं ई प्रेमाभक्ति, रसे नहि रसराजक आसन ग्रहण कयलक। अगाध प्रतिभाक धनी गौड़ीय वैष्णव रसशास्त्रीक सुवर्ण लेखनी सँ विलक्षण लक्ष्य-लक्षणक ई उज्ज्वल रस-मणि अपूर्व प्रतिष्ठाप्राप्त कयलक! ओहि युगक प्रत्येक काव्य-विधामे, काव्य नाटक चम्पू गीतशैलि ओ छन्दबन्धमे, भारत-भारतीक जेना ई श्रृङ्गार-हार बनि गेल हो!

एतय रति-अनुराग स्थायी भाव आदिरसक सामने, परञ्च आलम्बन मात्र राधा-माधव कें बनाय हुनक सखा-सखी सहचर-सहचरीसँ संकुल, गोकुल-वृन्दावनक पुरपथ-वलवीथीकें सजाय व्रजक लघु गागरमे रसक विशाल सागर अँटा देल गेल! समस्त सृष्टिक रूप-शोभा जेना समेटि कय गोकुल-गलीसँ वृन्दानिकुञ्ज धरिक धूलि मे लोटा रहल हो! जेना साहित्य-सरोवरक यावतो स्वर्ण-सरोज वृन्दा-वापीमे संचित अर्चित कय देल गेल हो! जीवनक यच्च-यावच्च माधुर्य निचोड़ि जेना व्रज-रजमे मिला देल गेल हो!

प्रकृति-पुरुषक समग्र दर्शन, नर-नारीक यावतो भाव—अनुभाव, रस-अलंकृतिक समस्त अनुभूति-विच्छित्ति जेना राधा-माधव कें केन्द्र-बिन्दु मानि व्यासवृत्त बनि गेल हो!

तखन पुनि ऋतुचक्रवर्ती सावोन-भादवकें, एहि रसक अनुवर्ती बनि, अपनाकें कृतार्थ करब सर्वथा संगते-समुचिते।

चिरन्तन दम्पती

साओन - भादव

प्रकृति-पुरुष दम्पती चिरन्तन
मिलित रस-भरित साओन-भादव

नवल श्याम घन नभ-निकुञ्ज मे
कनक-गौरि चञ्चला संग मे
प्रणय-केलि रस भरल, तरल उर
शत अनंग रुचि अङ्ग-अङ्ग मे

भक्त-मयूर-वृन्द अभिनन्दित
नृत्य-निरत नित प्रणय-उत्स नव
प्रकृति-पुरुष दम्पती चिरन्तन
मिलित रस-भरित साओन-भादव

× × ×

कालिन्दी-उपमित वर्षा-जल
नित नवीन द्रुम-श्यामल वन-पथ
नन्द-निदेश घन क ध्वनि पल पल
राधा-माधव केलि-कुतूहल

जयतु प्रेम-रस रसिक हृदयगत
ध्वनित जगत मधु प्रणय-वेणु रव
प्रकृति-पुरुष दम्पती चिरन्तन
मिलित रस-भरित साओन-भादव





मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा
(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥



॥ विज्ञापन ॥



मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय, एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो, तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो । (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्ल्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय । एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपें उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि ।

३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविधविरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि । ओ दरभङ्गाक कलेक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि । बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथझा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासदगणमें सँ छथि ।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एक रुपैया नियत कयलगेल अछि ।

५ उक्त विषय सम्बन्धमें जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि ।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा ।